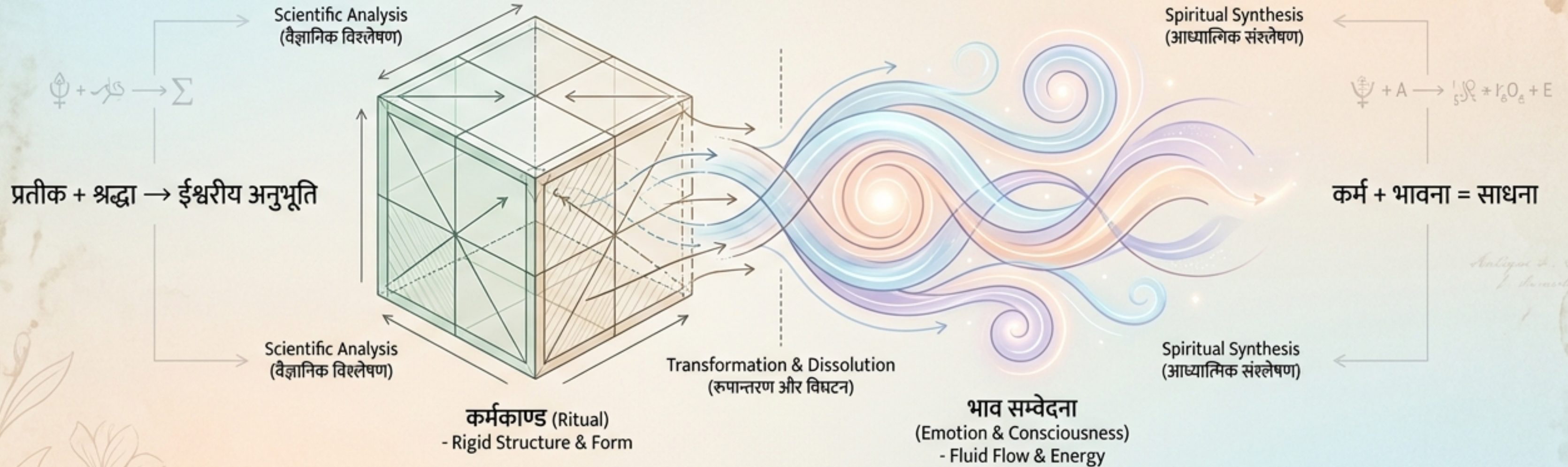


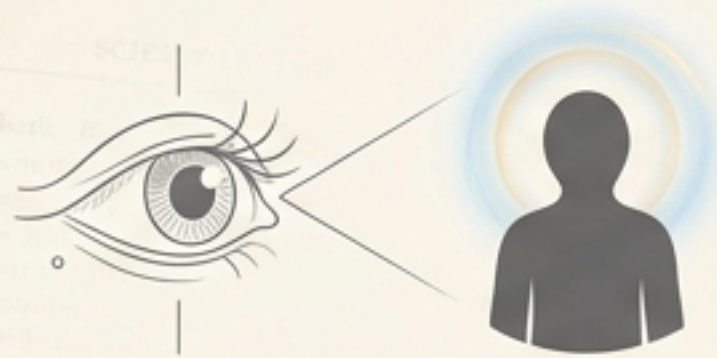
कर्मकाण्ड और भाव सम्वेदना का विज्ञान

मूर्तिपूजा, प्रतीक और ईश्वर-प्राप्ति का वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक विश्लेषण
(अध्याय 8: जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ईश्वर को कैसे समझें? मानवीय आकांक्षा और ईश्वरीय वास्तविकता



मानवीय सीमा (Human Constraint)

अर्जुन, यशोदा, काकभुशुण्डि

आकांक्षा: ईश्वर के साक्षात् / साकार दर्शन

सीमा: मानव मस्तिष्क निराकार को सीधे ग्रहण नहीं कर सकता।



समाधान का मार्ग (The Scientific Solution)

सर्वव्यापी सत्ता (Formless)

माध्यम: प्रतीक-प्रतिमा (Idols/Symbols)

प्रक्रिया: उत्कृष्टता की भाव-श्रद्धा का जुड़ाव

परिणाम: परब्रह्म की अनुभूति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रशाश जन-से आप सबसे कल्येग – सब बच्चों से कहियेगा – सब सबको के सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे जौन-जन तब को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतीकों का मनोविज्ञान: एक प्रमाणित सत्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

लौकिक विज्ञान - Physical Psychology



कपड़े का टुकड़ा
(राष्ट्रध्वज)



देश भक्ति की भावना
का समावेश



राष्ट्र के प्रति समर्पण
और गौरव

आध्यात्मिक विज्ञान - Spiritual Psychology



पाषाण/धातु
(प्रतिमा)



न्यायनिष्ठ और सर्वव्यापी
सत्ता का आरोपण



सत्प्रवृत्तियों के समुच्चय
(ईश्वर) से जुड़ाव

प्रतिमा स्वयं ईश्वर नहीं है, बल्कि ‘भाव-श्रद्धा’ के माध्यम से ईश्वर के गुणों से जुड़ने का एक वैज्ञानिक उपकरण है।

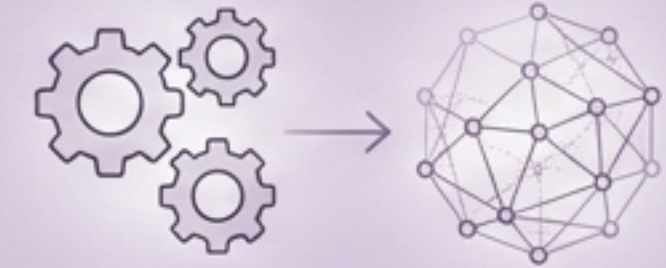
‘विराट् स्वरूप’ का वास्तविक अर्थ क्या है?

आलंकारिक दृष्टिकोण (गीता)



यह विशाल विश्व ब्रह्माण्ड ही विराट् ब्रह्म की साक्षात् और सजीव प्रतिमा है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (दर्शन)



ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि ब्रह्माण्ड का एक ‘नियामक सूत्र संचालक’ के एक ‘नियामक सूत्र संचालक’ (Cosmic Controller) है।

विश्वव्यापी उत्कृष्टता
(Global Excellence)

यही एकमात्र उपासना योग्य
ईश्वरीय सत्ता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ईश्वरीय सत्ता के 3 वैज्ञानिक स्तंभ

वैज्ञानिक दृष्टि से, ईश्वर को ब्रह्माण्ड के इन तीन अटल नियमों के रूप में जाना जा सकता है:

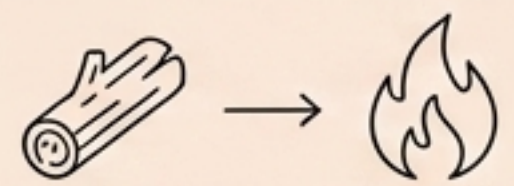
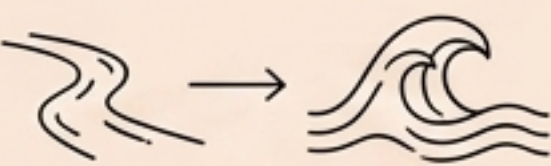
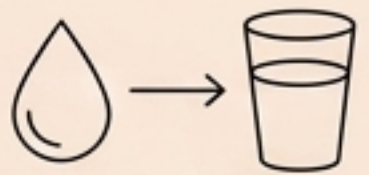


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समर्पण का भौतिक विज्ञान (तन्मय और तद्रूप होना)

भौतिक दृष्टांत (Physical Analogy)	वैज्ञानिक प्रक्रिया (Process)	आध्यात्मिक अर्थ (Spiritual Meaning)
 ईंधन और अग्नि	ईंधन अपना अस्तित्व मिटाता है और अग्नि बन जाता है।	साधक को ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण करना पड़ता है।
 नाला और नदी	नाला नदी में विलय होकर नदी का विस्तार बन जाता है।	जीव का परब्रह्म में विसर्जन।
 पानी और दूध	पानी दूध में घुलकर उसका स्वाद और स्वरूप धारण करता है।	जीवात्मा का परमात्मा की व्यापकता को ओत-प्रोत करना।

द्वैत से अद्वैत की यात्रा: एकाकार होने का मनोविज्ञान

Point A (द्वैत - Duality):
दो अलग सत्ताएँ (जैसे पति और पत्नी
का आरंभिक स्वरूप)।

Point B (माध्यम - The Catalyst):
समर्पण की मानसिकता और उत्कृष्ट
भाव-सम्बेदना।

Point C (अद्वैत -
Non-duality):
एकात्मता (अखंड इकाई)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

उपासक (Seeker) + इष्ट (Divine Virtues) = अद्वैत (Ultimate Oneness)

उत्कर्ष का अंतिम परिणाम: 'नर से नारायण' का समीकरण

$\left[\begin{array}{c} \text{साधारण मनुष्य} \\ \text{(Normal Human)} \end{array} \right] + \left[\begin{array}{c} \text{देवत्व के गुण} \\ \text{(Divine Traits / Excellence)} \end{array} \right] \rightarrow \left[\begin{array}{c} \text{देवता} \\ \text{(Deity)} \end{array} \right]$

$\left[\begin{array}{c} \text{जीवात्मा} \\ \text{(Individual Soul)} \end{array} \right] + \left[\begin{array}{c} \text{व्यापकता का दृष्टिकोण} \\ \text{(Omnipresent Perspective)} \end{array} \right] \rightarrow \left[\begin{array}{c} \text{परमात्मा की स्थिति} \\ \text{(Supreme State)} \end{array} \right]$

परिणाम: इस वैज्ञानिक एकात्मता का परिणाम है — 'अलौकिकता' (Supernatural capability)। ऋषियों और सिद्ध पुरुषों को इसी वैज्ञानिक आधार पर श्रेय और सम्मान दिया जाता है। वे व्यवस्था में उलट-फेर करने में सक्षम हो जाते हैं।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्कर्ष: पूजा और सम्वेदना का महा-विज्ञान

[प्रतीक/कर्मकाण्ड]

मूर्तियाँ और कर्मकाण्ड केवल मन को एकाग्र करने वाले 'वैज्ञानिक उपकरण' हैं।

वसन्त पंचमी १९९०
को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

[अंतिम लक्ष्य]

ईधन और अग्नि की तरह स्वयं को उत्कृष्ट सत्ता में 'विलीन' कर देना ही सच्ची पूजा है।

[भाव सम्वेदना]

उत्कृष्ट भावनाएँ ही वह 'ऊर्जा' हैं जो इन उपकरणों को जाग्रत करती हैं।

[ईश्वरीय स्वरूप]

अनुशासन, सन्तुलन, और सुनियोजन ही ब्रह्माण्ड का 'सच्चा ईश्वर' है।